

वृद्धि का नियम अवश्यंभावी है, और मेरा मन निरंतर प्रचुर वृद्धि के लिए खुला रहता है।

मेरा व्यवसाय बढ़ता है, विस्तार पाता है और अद्भुत तरीके से विकसित होता है, तथा मेरी आर्थिक समृद्धि निरंतर कई गुना बढ़ती रहती है।

मुझे अपने भीतर स्थित अनंत भंडार से आंतरिक और बाह्य रूप से भरपूर एवं प्रचुर आपूर्ति प्राप्त होती है।

मैं अपने मन और हृदय को ईश्वर की प्रचुरता और समृद्धि के लिए खोलता/खोलती हूँ, और मैं भीतर तथा बाहर दोनों रूपों में निरंतर अधिक समृद्ध होता/होती जा रहा/रही हूँ।